एक्लैम्पसिया प्रबंधन

उद्देश्य

एक्लैम्पसिया के कारण, प्रबंधन और उपचार के बारे में जानना।

एक्लैम्पसिया की पहचान

1. यदि किसी गर्भवती महिला को गर्भावस्था के 20 सप्ताह के बाद डायस्टोलिक रक्तचाप 90 **mm Hg** से अधिक है व 4 घण्टे के अन्तराल पर दोबारा भी अधिक है तो उसे गर्भावस्था के दौरान **Pregnancy Induced Hypertension** है।

2. गर्भावस्था, प्रसव या प्रसवोपरांत अवधि में उच्च रक्तचाप बढ़ने और पैरों में सूजन और प्रोटीनयूरिया की उपस्थिति का एक साथ होने की अवस्था को **प्री–एक्लैम्पसिया** कहते है।

3. गर्भावस्था, प्रसव या प्रसवोपरांत अवस्था में पड़ने वाले दौरे सामान्यतः **एक्लैम्पसिया** की वजह से होते हैं।

प्री–एक्लैम्पसिया में खतरे के लक्षण

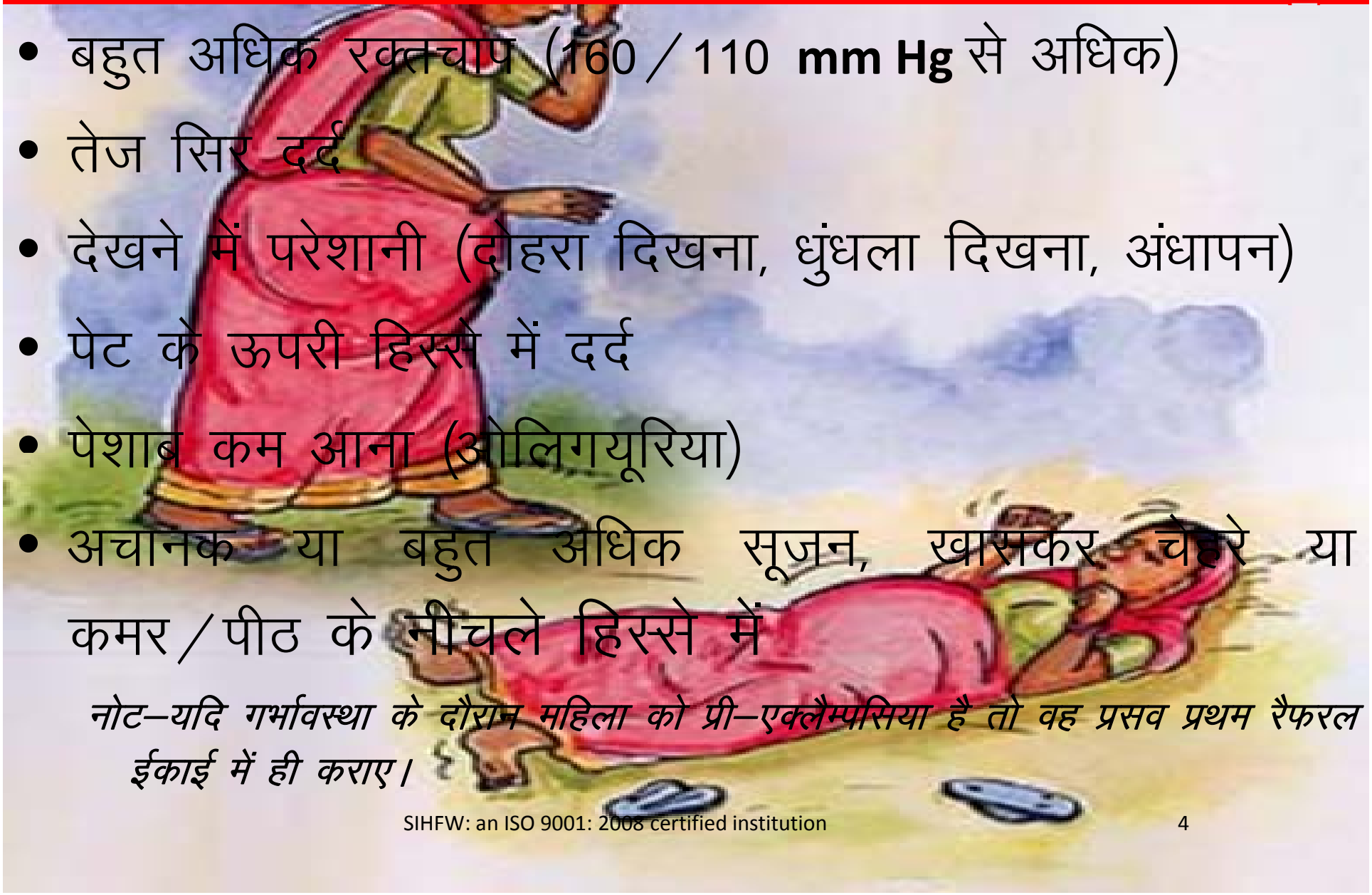

- बहुत अधिक रक्तचाप (160 / 110 **mm Hg** से अधिक)
- तेज सिर दर्द
- देखने में परेशानी (दोहरा दिखना, धुंधला दिखना, अंधापन)
- पेट के ऊपरी हिस्से में दर्द
- पेशाब कम आना (ओलिगयूरिया)
- अचानक या बहुत अधिक सूजन, खासकर चेहरे या कमर / पीठ के नीचले हिस्से में

नोट–यदि गर्भावस्था के दौरान महिला को प्री–एक्लैम्पसिया है तो वह प्रसव प्रथम रैफरल ईकाई में ही कराए।

प्री–एक्लैम्पसिया

1 यदि महिला को उच्च रक्तचाप है मगर रक्तचाप 160/110 mm Hg से कम है और प्रोटीनयूरिया उपस्थित नहीं हैं तो महिला को घर पर संभाला जा सकता है।

- प्रतिदिन या एक दिन छोड़कर अगले दिन महिला का रक्तचाप नापें
- महिला को कम काम करने व पर्याप्त आराम करने की सलाह दें
- महिला को सलाह दें कि वह बाईं करवट लेटे
- यदि रक्तचाप बढ़ जाए तो महिला को प्रथम रेफरल इकाई पर रेफर करें

प्री–एक्लैम्पसिया

2 यदि गर्भावस्था के दौरान महिला का रक्तचाप 160/110 mm Hg से अधिक है और प्रोटीनयूरिया उपस्थित नहीं हैं तो उसे उच्च रक्तचाप की दवा हेतु पी. एच.सी. के डॉक्टर के पास भेजें।

गंभीर प्री–एक्लैम्पसिया की पहचान

- **महिला को गर्भावस्था में तांण (fits) आ सकती है। एक्लैम्पसिया होने से पहले महिला में निम्नलिखित लक्षण (premonitory symptoms) हो सकते हैं।**
  - सूजन (swelling) खासतौर से चेहरे पर या कमर के निचले हिस्से पर
  - तेज सिर दर्द
  - निद्रा की अवस्था
  - घबराई हुई रहना या चिड़चिड़ापन
  - आंखो के आगे धुंधलापन
  - पेट के ऊपरी भाग में दर्द
  - जी मचलाना या उल्टी होना
  - सांस फूलना

गंभीर प्री–एक्लैम्पसिया / संभावित एक्लैम्पसिया के लक्षण

- अचानक रक्त चाप बढ़ जाना डायस्टोलिक रक्तचाप 110 mm Hg से अधिक है
- पेशाब कम आना
- पेशाब में प्रोटीन की मात्रा बढ़ जाना

नोट–यदि उच्च रक्तचाप के साथ ऊपर दिये गए लक्षणों में से कोई भी लक्षण हो तो तांग आने की संभावना बढ़ जाती है। इसका उपचार तुरंत शुरू करना चाहिये।

गंभीर प्री–एक्लैम्पसिया का उपचार

1 मैग्नीशियम सल्फैट 10 ग्राम IM दें।

2 निफेडिपीन कैप्सूल 10mg में छेद करके जीभ के नीचे रखें।

3 तुरन्त रेफर करें।

एक्लैम्पसिया की पहचान

यदि गर्भवती महिला को तांण के दौरे आयें, तो एक्लैम्पसिया मानकर उपचार करें। इनमें अधिकांश परिस्थितियों में रक्तचाप अधिक होता है व पेशाब में प्रोटीन होता है। परंतु कभी–कभी इनके बिना भी एक्लैम्पसिया हो सकता है।

एक्लैम्पसिया की अवस्था

एक्लैम्पसिया में ताण आती है तो इसकी निम्नलिखित चार अवस्थाएं होती हैं

1 प्रीमोनीटरी– यह अवस्था 10–20 सेकण्ड रहती है। इसमें आंखें उपर चढ़ती हैं व घूमती हैं, मुंह व हाथों की मांसपेशियां सिकुड़ती हैं और बेहोशी आती है

2 टोनिक– यह अवस्था 10–20 सेकण्ड रहती है। इसमें मांसपेशियां कड़क हो जाती हैं, डायफ्राम सिकुड़ जाता है, सांस रूक जाती है, मुंह, होठ व हाथ–पैर नीले पड़ जाते हैं, कमर धनुष की तरह पीछे मुड़ जाती है, दांत भिच जाते हैं व आंखे बाहर को निकली हुई दिखती हैं

एक्लैम्पसिया की अवस्था

3 क्लौनिक– यह अवस्था 1 से 2 मिनट रहती है मांसपेशियों में बहुत जोर से संकुचन होता है, मुंह से झाग आते हैं, सांस लेने में कठिनाई होती है, कभी–कभी थूक श्वास नली में चला जाता है, चेहरा लाल पड़ जाता है और महिला जीभ काट लेती है

4 कोमा– यह अवस्था कई मिनिट या कई घंटों तक रह सकती है, सांस बहुत जल्दी चलती है और उसमें आवाज़ आती है व चेहरा सूजा हुआ रहता है लेकिन उसका रंग नीला नहीं रहता। फिर से ताण आने का अंदेशा रहता है इसलिये महिला की अच्छी देखभाल करते रहना चाहिये

एक्लैम्पसिया का उपचार

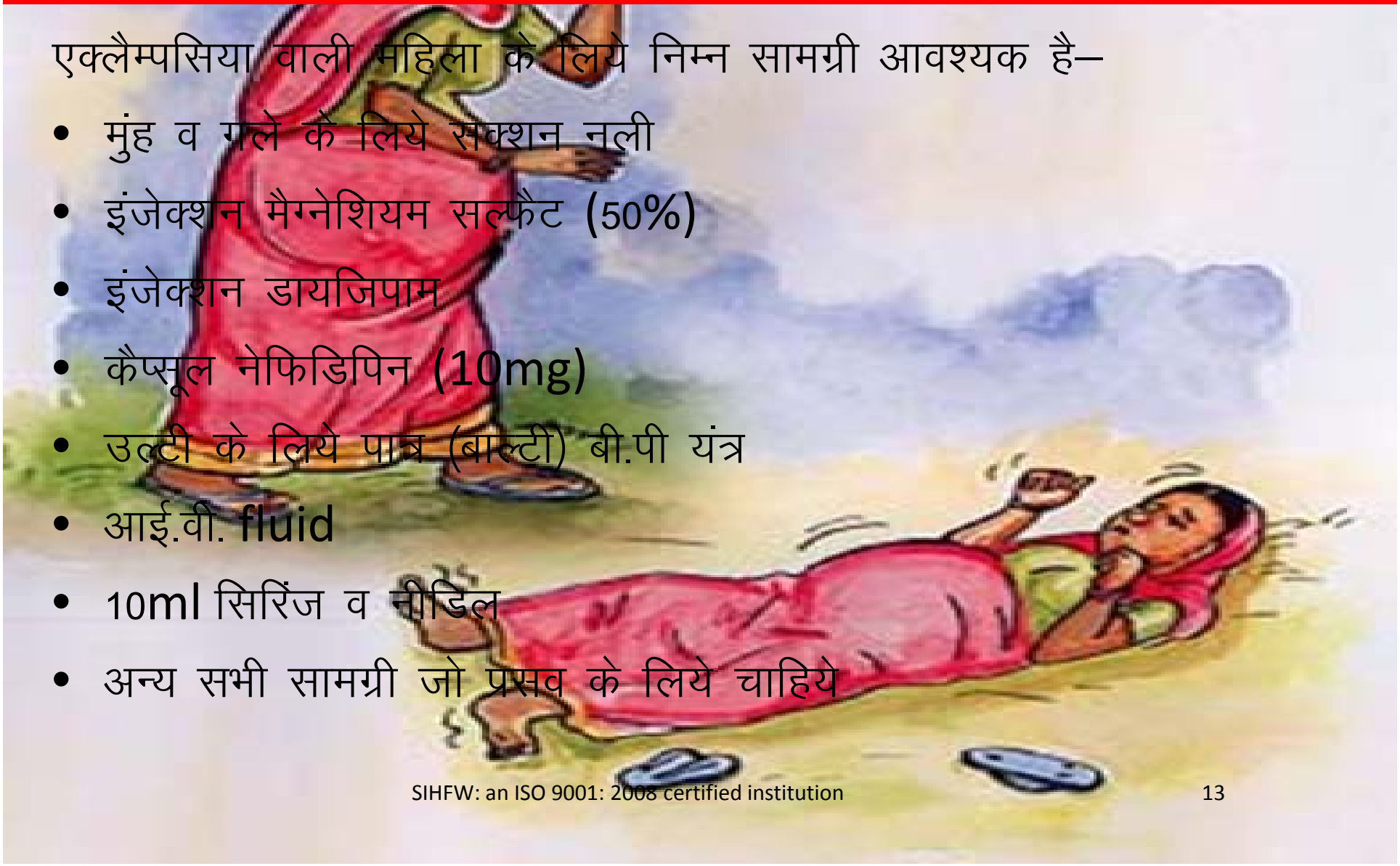

एक्लैम्पसिया वाली महिला के लिये निम्न सामग्री आवश्यक है–

- मुंह व गले के लिये सक्शन नली
- इंजेक्शन मैग्नेशियम सल्फैट (50%)
- इंजेक्शन डायजिपाम
- कैप्सूल नेफिडिपिन (10mg)
- उल्टी के लिये पात्र (बाल्टी) बी.पी यंत्र
- आई.वी. fluid
- 10ml सिरिंज व नीडिल
- अन्य सभी सामग्री जो प्रसव के लिये चाहिये

एक्लैम्पसिया का उपचार

1 **यदि महिला को एक्लैम्पसिया हो जाए तो सर्वप्रथम ध्यान दें**

- महिला को अकेला न छोड़ें
- महिला को गिरने या चोट लगने से बचाएं
- सुनिश्चित करें कि महिला का श्वसन मार्ग साफ रहे और सांस ठीक से चलती रहे
- यदि महिला बेहोश हो तो उसे पीठ के बल लिटा दें और हाथ बगल में रखें, सिर को पीछे की ओर कर दें और ठोडी को ऊपर की ओर उठाएं ताकि सांस का मार्ग खुल जाए, उसके मुंह में कोई चीज हो तो निकाल दें।

एक्लैम्पसिया का उपचार

- दौरा समाप्त होने के बाद महिला को बाईं करवट लेटने में मदद करें
- ऊपरी और निचले जबड़े के बीच कुछ फंसा दें ताकि वह अपनी जीभ न काटे, ध्यान रखें कि जब दौरा पड़ रहा हो तो ऐसा करने की कोशिश न करें

2 महिला का रक्तचाप व नाड़ी को नापें व रिकॉर्ड करें

एक्लैम्पसिया का उपचार

3 महिला के दोनों कूल्हों में 10–10 मिली. अलग–अलग मैग्नेशियम सल्फेट इंजेक्शन मांसपेशियों में गहरे में लगाएं। यह जरूरी है कि इंजेक्शन काफी गहरे में दिया जाए अन्यथा इंजेक्शन की जगह पर फोड़ा या घाव बन सकता है। महिला को बता दें कि इंजेक्शन लगाते समय उसे गरमी महसूस हो सकती है।

4 महिला को आई.वी. तरल शुरू करें (कम गति से 30 बूंद प्रतिमिनट)

एक्लैम्पसिया का उपचार

5 महिला को तुरंत प्रथम रैफरल इकाई भेजने की व्यवस्था करें। यह सुनिश्चित करें कि मैग्नेश्यिम सल्फेट की पहली खुराक मिलने के दो घंटे के भीतर महिला रैफरल केंद्र पर पहुंच जाए।

याद रखें

- शुरूआती प्रबंधन के बाद महिला को शीघ्र प्रथम रैफरल इकाई पर रैफर करें।

एक्लैम्पसिया का उपचार

6 यदि अस्पताल पहुंचने से पहले फिर से दौरा आये तो 2gm मैग्नेश्यिम सल्फेट IM दोबारा दें।

7 यदि मैग्नेश्यिम सल्फेट उपलब्ध नहीं है या शुरू के 5 माह की गर्भावस्था में दौरे आएं तो डाइजिपाम इंजेक्शन दें। डाइजिपाम 10 एमजी आई.वी. बहुत धीरे–धीरे 2 से 3 मिनट में दें। यदि अस्पताल पहुंचने से पहले दोबारा दौरा आए तो 10 एमजी डाइजिपाम और दें।

एक्लैम्पसिया का उपचार

- यदि किसी कारण से डाइजिपाम आई.वी. देना संभव न हो तो rectum के द्वारा दें। इसके लिये 20 एमजी डाइजिपाम एक 10 ml सिरिज में लें, नीडिल हटा दें और सिरिंज को लुब्रिकेटेड करके आधी लम्बाई तक rectum में डालें। इसके बाद 10 मिनट तक महिला के कुल्हों को दबा के रखें ताकि दवा बाहर न आ जाये।

एक्लैम्पसिया का उपचार

8 यदि डाइस्टोलिक रक्तचाप 110 मिमि. से अधिक है तो रक्तचाप कम करने के लिये दवाई दें। निफेडिपिन कैप्सूल 10 mg में छेद करके जीभ के नीचे रखें।

9 जैसे ही ताण का दौरा बन्द हो, महिला को रेफरल अस्पताल में भेजने की व्यवस्था तुरन्त करें। यदि महिला होश में है तो उसके घर वालों को जल्दी से परंतु शांति से समझायें कि उसे क्या समस्या है व रेफर करने की क्यों आवश्यकता है साथ में नर्स का जाना जरूरी है ताकि आवश्यकतानुसार दवाई दी जा सके।

एक्लैम्पसिया का उपचार

10 सब दवाओं का व मरीज की हालत का, हर 10 मिनट का रिकॉर्ड रखें। खासतौर से निम्नलिखित का :—

- रक्तचाप [B.P]
- सांस की गति
- पेशाब की मात्रा
- दवायें जो दी गई

याद रखें

- मामूली या मध्यम प्री–एक्लैम्पसिया के अक्सर कोई लक्षण नहीं होते हैं।
- यदि प्रोटीनयूरिया बढ़ रहा है तो यह प्री–एक्लैम्पसिया बढ़ने का संकेत है। पैरों की सूजन को प्री–एक्लैम्पसिया का चिन्ह नहीं माना जाता है।
- एक्लैम्पसिया होने पर कभी–कभी रक्तचाप सामान्य भी रह सकता है यदि किसी गर्भवती महिला को ताप आये तो यह एक्लैम्पसिया का चिन्ह है।
- मामूली प्री–एक्लैम्पसिया अचानक कम समय में गंभीर प्री–एक्लैम्पसिया में बदल सकता है।

धन्यवाद